संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उत् ज्योतिः चक्रथु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : १० ● १० मार्च, २०१५ चैत्र कृष्ण चतुर्थी, सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आर्य समाज की तब और आज की दशा और दिशा

पं० उम्मेद सिंह विशारद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने १० अप्रैल १८७५ को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी और आर्य समाज ने जन्म से लेकर आज तक संसार के मनुष्यों को सदैव सत्य मार्ग दिखाया है और परमात्मा की अमर वाणी वेदों का नित्य प्रचार कर रहा है।

महर्षि दयानन्द जी जब रण क्षेत्र में उतरे थे उस समय इस देश में चारों ओर ललकार ही ललकार सुनाई दी चारों ओर चैलेंज ही चैलेंज नजर आये। उन्होंने उन सभी चुनौतियों को स्वीकार किया और सबसे पहला प्रहार वेदों के रूढ़ि अर्थो पर किया। उनका कहना था कि भारत के पंडितों ने वेदों के अर्थ के अनर्थ किये है। पंडितों ने ऐतिहासिक अर्थ किये है जो बिल्कुल गलत है। इन अनर्थो के कारण अनेक भ्रान्तियां और अन्धविश्वास भारत में फैल गये है और भारत की लम्बी गुलामी का कारण भी उन्होंने धार्मिक सामाजिक अन्धविश्वास और आपसी परस्पर फूट को माना है।

उन्होंने वेदों के ईश्वर परक अर्थ समाज के सामने रखे तो सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक नई वैचारिक क्रान्ति ने जन्म लिया और जनता को एक नये विचारों द्वारा दिशा मिली। सदियों का गुलाम भारत सुषुद्रित से जागृत अवस्था में आने लगा। उन्होंने जमाने की गर्दन पकड़ कर अपने पीछे चलाया। महर्षि ने भारत में प्रचलित प्रत्येक रूढ़िवाद पर प्रहार किया। उन्होंने कहा भारत का धर्म वेदों से बंधा है और पंडितों द्वारा सत्य अर्थो को न पकड़ने से अनेक कुरीतियों व अन्धविश्वासों ने जन्म लिया है। जैसे स्त्रियों को पढ़ना नहीं चाहिए, शूद्रों को नही पढ़ना चाहिए, वर्ण व्यवस्था जन्म से होनी चाहिए, काल्पनिक देवताओं की पूजा करनी चाहिए। ईश्वर जन्म मरण में आता है, ईश्वर अवतार लेता है आदि। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के अनुसार उपयुक्त सभी मान्यताओं को उलट दिया और भारत को वेदों के अनुकूल और सृष्टि क्रमानुसार सिद्धान्त बता कर प्राचीन संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाया।

महर्षि दयानन्द जी के मुख्य कार्य :

सामाजिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार :- महर्षि दयानन्द जी के विचारों का दृष्टिकोण सर्वथा मौलिक था, वे भूत, वर्तमान तथा भविष्य को पिछले और अगले से मिला कर चलना चाहते थे। उन्होंने बाल-विवाह, जाति-पाति, छुआछूत, मृतक भोज, सब को यज्ञोपवीत न पहनने का अधिकार, काल्पनिक देवी देवताओं के नाम पर निरीह, पशु की हत्या का प्रबल विरोध किया। वह समाज में अन्ध स्थिरता के पक्षपाती नही थी, अपितु सत्य गतिशीलता के पक्षपाती थे।

उनके समय का समाज नवीनता से डरता था और वह चाहता था जो चला आ रहा है वही ठीक हैं स्त्री शिक्षा का इस देश में खात्मा हो चुका था, बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध, दहेज की प्रथा, ये सब परम्परायें इस देश में रूढ़ि हो चुकी थी, इनके विरूद्ध बोलने का किसी को साहस नही था।

महर्षि दयानन्द ने इन सब रूढ़िवाद को जहाँ धार्मिक क्षेत्र में उखाड़ फेंका। वहीं सामाजिक क्षेत्र में भी इन कुप्रथाओं को निकाल बाहर कर दिया यही कारण है कि १६वीं शताब्दि में समकालिन समाज सुधारकों से जितनी सफलता उनको मिली, उतनी सफलता अन्य किसी को नहीं मिली थी।

राजनैतिक क्षेत्र में रूढ़िवाद पर प्रहार :-

महर्षि दयानन्द की विचारधारा का आधार रूढ़िवाद का उन्मूलन था। राजनैतिक क्षेत्र में जिसका राज्य चला आ रहा है वही ठीक है यह रूढ़ि विचार चला आ रहा था। उन्होंने इस विचार पर भी प्रहार किया और सत्यार्थ प्रकाश के ८वें सम्मुलास में उन्होंने लिखा कि अभाग्योदय और आर्यो के आलस्य प्रमाद परस्पर विरोध से अन्य देशों की राज्य की कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यो का अखण्ड स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है जो कुछ है सो विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है, कोई कितना भी करे परन्तु स्वदेशी जो राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

तब का आर्य समाज -

महर्षि दयानन्द के समय व उनके दिवगंत होने के अर्धशताब्दि तक आर्य समाज का अति स्वर्णिम काल रहा है जितनी आर्य समाज की उन्नति इस काल में हुई थी उसके बाद हम उसी को भुनाने में लगे हुए है। उस समय के आर्य, पुरुषार्थ, निस्वार्थ, त्यागी और एक क्रान्ति का जज्बा लिये आर्य समाज का कार्य करते थे, आर्य समाज की उन्नति में अडे रहे डटे रहे, मिटते रहे और आर्य समाज को विश्व में प्रथम पंक्ति में लाकर

शेष पृष्ठ..........५

बोध मुझे भी ऋषि बोधोत्सव पर

बोध मुझे भी हुआ ऋषि बोधोत्सव के,
पर बोध मुझे यह दिवस में हुआ।
आंख खोल दी, ऋषिवर ने मेरी,
सुहृदयों से मुझे यह ज्ञान हुआ।।
भटक रहा था विश्वास में अब तक,
बंधु सखा स्नेही सब है मेरे।
पर ऋषि बोधोत्सव को, ज्ञान हुआ यह,
पड़ा हुआ हूँ, बीच भंवर में मै घेरे
आज ज्ञान मिला मुझ अज्ञानी को
विश्वास में आज मेरा क्या हाल हुआ।
आंख खोल ....
जो भी हुआ वह होना ही था
इसी बहाने मुझे बोध हो गया,
स्नेही फंसे मायारूपिणी में
दर्द आपस का व्योवहार जुट गया
खेल खेल भई चतुर चतुरिनी ने
जो उस ने चाहा वैसा ही हुआ।
आंख खोल ....
नहीं शिकायत फिर भी किसी से
यह जगत है मिथ्या होता रहता है
कौन है अपना कौन पराया
यह जग मृगतृष्णा ज्ञानी कहता है
निश्चल मन 'सागर' फिर भी कहे यह
जो होना था हुआ सो ठीक हुआ
आंख खोल ......

डॉ. बी.पी.सागर, अंतरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

वेदामृतम्

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरितातति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋ.६.७०.६

(सोम) हे सोम परमात्मन्! (तू), (वृषा) वर्षक(होता हुआ), (देववीतये) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (पवस्य) प्रवाहित हो, (इन्द्रस्य) आत्मा के, (हार्दि) हृदय रूप, (सोमधानं) सोम-कलश में, (आविश) प्रविष्ट हो।, (बाधात्) बांधे जाने से (पुरा) पहले, (नः) हमें (दुरिता अति) पापचरणों से लंघाकर, (पारय) पार कर दे। (क्षेत्रवित्) मार्ग का ज्ञाता, (विपृच्छते) विशेष रूप से पूछने वाले के लिए (दिशः) दिशाओं को, (आह हि) बताता ही है।

हे रससागर सोम परमात्मन! तुम वृषा हो, रस की वर्षा करने वाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय रूप सोम-कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम-पान के लिए उत्कंठित हो रहा है उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी कभी मेरा आत्मा 'दुरितो' से घिर जाता है। तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि दुरित मेरे आत्मा को पतनोन्मुख करे, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितो से लंघाकर पार कर दो। हे मेरे सोम प्रभु! मैं दिग्भ्रांत हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यंत्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

डॉ. रामनाथ वेदालंकार

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

भारत के सुनिर्माण के लिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बदलना अनिवार्य

हमारा देश भारत कभी सम्पूर्ण विश्व का गुरू था, सारे देशों से शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए यहां आने में अपना सौभाग्य मानते थे चूँकि हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था वेदाधारित थी।

सभी शिक्षार्थी गुरूकुलों में गुरूचरणों में बिना किसी जाति वर्ग भेद के बैठकर शिक्षा प्राप्त करते थे और अपने मानव जीवन को सार्थक बनाते थे। महाभारत काल से शिक्षा में गिरावट आने लगी। जब राजमहलों में राजपुत्रों को पढ़ाने के लिए गुरूजन जाने लगे यहीं से वर्ग भेद पनपने लगा। एकलव्य-जैसे सुयोग्य धनुर्धर से गुरू द्रोणाचार्य को राजपुत्रों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते हुए दूर से ही देखकर-धनुर्धर बन गया था परंतु राजपुत्र से अधिक योग्य न बन जाये यह सोचकर गुरू द्रोणाचार्य ने गुरू दक्षिणा के नाम पर उसका अंगूठा ही कटवा दिया था। यहीं से वर्ग भेद पनपने लगा। वेदों से विपरीत पुराणादि मनुष्यकृत ग्रंथ धर्म ग्रंथ माने जाने लगे। उनका पाखण्ड फैलाने के लिए वेदों को पढ़ने का अधिकार सबसे छीन लिया गया। कहा जाने लगा कि वेद पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मण को ही है। बस उत्तरोत्तर गिरावट आने लगी। कर्तव्य के स्थान पर भाग्यवाद को प्रसारित किया जाने लगा। भगवान की पूजा मंदिरों में की जाने लगी।

हमारी समृद्धि को देखकर उसे लूटने के लिए पहले यवन आक्रान्ताओं ने हम पर आक्रमण करके हमें लूटा कंगाल बनाया। सोमनाथ मंदिर का निर्माण बड़ी वैज्ञानिक विधि से हुआ था परंतु उसमें संरक्षित वैभव को लूटने के लिए अक्रान्ताओं ने उसे तोड़ा। भाग्य वादी पण्डित उसके प्रतिरोध के बजाय उसे टूटता देखते रहे और सभी को भीरूता का उपदेश देते रहे (भगवान अभी प्रकट होकर इन अत्याचारियों का विनाश कर देंगे) मंदिर तोड़कर लूट लिया गया। अरबों की सम्पदा हमारी लुट गयी। और फिर उन्होंने हमें गुलाम भी बना लिया।

यवनों के बाद अंग्रेज आक्रान्ता व्यापारी बनकर यहां आये और धूर्तता से हमें अपना दास बना लिया और सदैव हमें पराधीन रखने के लिए इंग्लैंड के शिक्षा शास्त्री लार्ड मैकाले ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया कि भारतीय सदैव अपनी रोजी रोटी में ही उलझा रहे उसे अपने स्वत्व को जानने का अवसर भी न रहे। फलतः सभी विकार शीर्ष पर आ गये मातृ शक्ति नारी पद दलित कर दी गयी। फूट डालो शासन करो की नीति से जाति भेद वर्ग भेद बढ़ता गया। छुआ छूत उत्पन्न करायी गयी इस सबके लिए अंग्रेजों ने यहीं के तथाकथित ब्राह्मणों का (लोभ लालच देकर)उपयोग किया।

पराधीनता काल में ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का अभ्युदय हुआ। उन्होंने पराधीनता के मूल का गहराई से अध्ययन करके उसके मूल में नारी शोषण, अशिक्षा, जाति वर्ग भेद, ढोंग पाखण्ड एवं अनेक ईश्वरों की कल्पना को देखकर पराधीनता से मुक्त स्वाधीन राष्ट्र बनाने का संकल्प लेकर जन जागृति आरम्भ कर दी।

सर्वप्रथम उन्होंने कहा कि वेद ईश्वर की वाणी है वही हमारा धर्म ग्रंथ है। अतः हम सभी को बिना किसी जाति वर्ग भेद के उसे पढ़ना चाहिए और उसके अनुकूल ही अपनी आचरण शैली निर्धारित करनी चाहिए। बाकी पुराणादि मानव कृत ग्रंथ है। जिनसे ईश्वर के नाम पर अनेक विरोधाभासी भाव बनते हैं। जो हमें जोड़ने के स्थान पर तोड़ने का काम करते हैं। अतः उन्हें धर्म ग्रंथ मानने की भूल नहीं करनी चाहिए। उन्होंने जन जन में जागृति लाने के लिए आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की।

आन्दोलन तीव्र गति से चला अनेक गुरूकुल, बालक बालिकाओं के विद्यालय खुले जिनमें वैदिक शिक्षा से स्नातक तैयार हुये। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें भारी संख्या में आर्य नर नारियों ने भाग लेकर देश स्वतंत्र कराया। स्वाधीनता के बाद हमारी सरकार बनी हमारा संविधान बना संविधान में महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्यों को समाहित किया गया था। परंतु स्वाधीनता के बाद हमारे नेताओं ने देश की भौतिक समृद्धि पर ध्यान केन्द्रित कर दिया। पराधीन रहने वाली शिक्षा व्यवस्था के बदलने पर ध्यान नहीं दिया। फलतः भौतिक समृद्धि होने लगी परंतु नैतिकता का उत्तरोत्तर ह्रास होने लगा। आज समाज में वह सारी बुराइयाँ जो पहले थी नये नये रूप में बढ़ने लगी है। आज धन की ही प्रमुखता रह गयी है उसे पाने के लिए कुछ भी करना पड़े हमें वह करने में संकोच नहीं है। जीवन निर्माण के लिए वैदिक शिक्षा द्वारा हमें धर्म अर्थ काम और मोक्ष यह चार सूत्र दिये गये है। जिसका अर्थ धर्मपूर्वक कार्य करें कामनाये पूर्ण करके मोक्ष को प्राप्त करने के अधिकारी बनें। परंतु आज धर्म को न जानकर धर्म मत मतान्तरों को बना डाला गया है। हमारा जीवन अर्थ प्रधान हो गया है। अर्थ प्राप्ति के लिए कुछ भी करना आवश्यक मान लिया गया है। इसी से आज रिश्वतखोरी चोर बाजारी छीना छपटी बढ़ रही है काली कमाई करने वाला धन विदेशों में जमा करके देश को कंगाल बनाने में हमें कोई हानि नहीं दिखाई पड़ती।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की कल्पना स्वच्छ उन्नत समृद्ध भारत बनाने की है। २६ फरवरी २०१५ को संसद में अपने भाषण में उन्होंने अपनी इन शुद्ध भावनाओं को सगर्व घोषित किया है इसके लिए वे प्रशंसनीय व अभिनन्दनीय है। उनकी यह कल्पना पूर्णरूपेण साकार हो एतदर्थ उन्हें गंभीर चिन्तन की आवश्यकता है। अंग्रेजों ने हमें सदा पराधीन रखने की शिक्षा व्यवस्था चलायी है। जिसमें एक दूसरे में मतभेद डालने की जड़ जमी हुई हैं। उसी शिक्षा के अधीन सांसद व विधायक बनते हैं अतः वह राष्ट्र हित के बजाय, देश हित के बजाय पार्टी हित उससे भी पहले स्वहित का चिन्तन करते हैं और सदन में उसी चिन्तन के अनुसार अपना भाषण व व्यवहार करते हैं। राष्ट्र की निर्माणकारी योजनायें इसी कारण पीछे रह जाती हैं और वोट के आधार पर निर्णय हो जाते हैं जो कई बार राष्ट्र के लिए विघातक हो जाते हैं।

आज अंग्रेजी और अंग्रेजियत हमारी संस्कृति व सभ्यता का विनाश कर रही है और जन जन में उसका प्रसार बढ़ता जा रहा है। भोगवाद जीवन का अंग बनता जा रहा है। भोगवादी राष्ट्र का कल्याण कर ही नहीं सकता परंतु प्रचलित शिक्षा व्यवस्था तो निर्माण उसी पीढ़ी का कर रही है। अतः इस पर गंभीर चिन्तन की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत निर्माण के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति का सुचरित्र होना अनिवार्य है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर दृष्टि डालें तो उसमें चरित्र निर्माण का कोई पाठ ही नहीं हैं। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन अनिवार्य है। सारे देश में पढ़ाई के लिए पाठ्यक्रम एक हो। पढ़ाई का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, संस्कृत को अनिवार्य किया जाये। नैतिक शिक्षा का प्राथमिक कक्षा से स्नातक परीक्षा तक प्राविधान हो। उसकी परीक्षा के अंक महत्वपूर्ण माने जाये। सभी शिक्षा पूर्ण निःशुल्क हो उसका पूरा व्यय सरकार वहन करे। उसका बजट में प्रावधान हो। गरीब अमीर सभी को समान रूप में पढ़ने का अवसर प्राप्त हो। उसे अपनी प्रतिभा बढ़ाने का अवसर मिले। निश्चय ही ऐसा होने पर बच्चों का चारित्रिक विकास होगा जिससे सुचरित्र पीढ़ी तैयार होगी। फिर प्रधानमंत्री जी की स्वच्छ भारत समृद्ध भारत बनाने की कल्पना साकार होगी और हमारा सुख समृद्धि से पूर्ण संगठित भारत सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक बनेगा और विश्वगुरू के गौरव को पुनः प्राप्त करेगा।

सम्पादक

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना

-राजेश गुप्त वैदिक

जहाँ ईश्वर के स्वरूप का निरूपण तथा उसके दिव्यगुण कर्मो का विवेचन करने के पश्चात उसे प्राप्त करने की चर्चा होती है, वहाँ ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की बात अनिवार्यतः आती है।

ईश्वर के यथार्थ गुणों का वर्णन करना ही उसकी स्तुति कहलाती है। 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' की सूक्ति से समाप्त होने वाले मंत्र ईश्वर की स्तुति के हैं। यहाँ ईश्वर को हिरण्यगर्भ कहकर संकेत दिया है कि उसने सूर्य, चन्द्र आदि प्रकाशमान पदार्थो को बनाया है। उसी ईश्वर से मनुष्य को आत्म ज्ञान मिलता है। वही हमें शरीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक बल प्रदान करता है। सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी होने से ईश्वर चराचर जगत का शासक है।

स्तुति के पश्चात हमें प्रार्थना का अभिप्राय समझना चाहिये। अपने सम्पूर्ण पुरुषार्थ से अपने ध्येय को प्राप्त करने में लगे रहकर सफलता प्राप्त करने में हम ईश्वर से सहायता की याचना करें, यही प्रार्थना है।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।।

सृष्टि को उत्पन्न करने वाले, स्वतः प्रकाशमान ईश्वर से साधक भक्त की विनम्र प्रार्थना है - आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन तथा दुखों को दूर कर दें तथा जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव तथा पदार्थ आदि हैं। वे हमें प्राप्त करायें।

विश्व प्रसिद्ध गायत्री मंत्र में सविता देव (सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता ईश्वर) से हमारी प्रार्थना है कि वह हमें बुद्धिमान बनाये। वह हमारी बुद्धियों को सद्विचारों, सद्भावों तथा सत्कर्मो में प्रेरित करें। सद्बुद्धि के लिए तेजस्वी सविता देव के तेजस्वी, दुखनाशक तेज का ध्यान करना आवश्यक है। जहाँ हम ईश्वर से सर्वश्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ति की कामना करते हैं वहीं हम ईश्वर से स्वस्थ शरीर, दीर्घ आयु तथा तेज प्रदान करने की भी प्रार्थना करते हैं। वेद का अनुयायी यह मानता है कि ईश्वर में अपरिमित बल है, तेज है, शक्ति है, और शौर्य है। इन सभी गुणों के आगार ईश्वर को सम्बोधित कर भक्त उससे प्रार्थना करता है -

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि।

तेज, बल, वीर्य, मन्यु तथा सहनशीलता की प्रार्थना वैदिक चिन्तन की विशिष्टता है।

अपने मन और बुद्धि को ईश्वर से जोड़ने को उपासना कहते हैं। हमारी ईश्वर से विनम्र प्रार्थना है कि वह हमें सुपथ पर ले चले। यह प्रार्थना ईश्वर से इसलिए है क्योंकि वह हमारे समस्त गुण कर्मो का जानकार है। वही हमारे लिए श्रेयस्कर और मंगलकारी विधान प्रस्तुत करता है। मनुष्य को कुटिलता और अन्य पाप कर्मो से पृथक रखने का सामर्थ्य उसी में है। फलतः भक्त के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह ईश्वर की स्तुति रूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा करता रहे। इससे उसे अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होगी। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना हमारे द्वारा सतत किये जाने वाले कर्तव्य हैं। इनमें कभी अवकाश और प्रमाद नहीं करना चाहिये। ईश्वर की उपासना एक दिन का कर्म नहीं है। यह सतत् किए जाने वाला अनिवार्य और अपरिहार्य कर्म है।

-बी-१८२, संजय बिहार, हापुड़

धरोहर.....

वेदांगों के तत्ववेत्ता-पं. उमाकान्त जी उपाध्याय

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

कंधे पर दिव्य अंगवस्त्र, भारतीय वेशभूषा धोती एवं कुर्ते से सुशोभित नेत्रों पर उपनेत्र संजोये, शारीरिक रूपेण मल्ल की तरह शोभायमान लेकिन मृदुल मुस्कान से अपनी सम्मोहन शक्ति का संवर्द्धन करने वाले, अपनी वैदुष्यपूर्ण वाणीं से आबाल बृद्ध को प्रभावित करने वाले आर्य जगत में देदीप्यमान नक्षत्र वेद-वेदांगों के तत्ववेत्ता, विद्वदवरेण्य वन्दनीय अभिनन्दनीय पं. उमाकांत उपाध्याय जी कलकत्ते वाले का नाम सुनते ही श्रद्धा के भाव जागृत हो जाते हैं। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जनपद में जन्म लेकर जहां अपने उ.प्र. को गौरवान्वित किया वहीं सुभाष चन्द्र बोस की तरह कलकत्ता महानगर को भी आपने अभिनन्दनीय बना दिया। आपकी विशेष पहिचान कलकत्ता नगर की शोभा बढ़ाती रही आर्य सम्मेलन हो, वेद सम्मेलन हों और उसमें पं. उमाकान्त उपाध्याय आये तो लगता था महाराज जनक की सभा में मध्य उच्चासन पर प्रतिष्ठित महर्षि याज्ञवल्क्य पधार गए हैं। सभी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा फिर किसी अधिकारी नेता अथवा कार्यकर्ता या उपदेशक विद्वान सन्यासी को चिन्ता नहीं रहती थी कि किसी भी वाद विवाद अथवा शंका समाधान में प्रतिपक्षी का प्रत्युत्तर देने के लिए किसे कहा जायेगा, क्योंकि आप वैदिक प्रामाणिक विद्वान थे आप का अगाध वैदुष्य जहां आबाल वृद्ध को प्रभावित करता था वहां विदत्समाज में भी सम्मान प्राप्त करता था, आप अजातशत्रु बनकर अजेय योद्धा थे। महाबली पहलवान के समक्ष जैसे कोई भी पहलवान कुश्ती को तैयार नहीं होता वैसे ही आपके अगाध ज्ञान सागर से परिचित होकर कोई पक्षी विपक्षी आपके समक्ष शास्त्रार्थ करने के लिए साहस नहीं कर पाता था। आप अजेय योद्धा थे, सरस्वती के वरद पुत्र ने सदैव वीणा वादिनी की गरिमा को अपने वैदुष्य से वरेण्य बनाया, आपकी वाणी पर सरस्वती विराजमान है ऐसा कहकर लोग आपका सम्मान करते थे ऐसे श्रेष्ठतम वाग्मी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे मानस पुत्र थे, महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करके वे वेदज्ञान का आलोक जनमानस में करते रहे। इस पुनीत कार्य को वे अपना परम धर्म स्वीकार करते थे। मानों ऋषि ऋण को उतारने का संकल्प लेकर ''अहर्निशं सेवामहे'' इस वाक्य को सार्थक कर रहें हो। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था में अंतिम श्वास तक आपकी वाणी और लेखनी पं. लेखराम आर्य मुसाफिर की प्रेरणा को सार्थक करती रही। आचार्य द्रोण की प्रतिज्ञा की तरह द्वाभ्यामेव समर्थोस्मित्र शापाद् अपि श्रादपि अग्रतो में चतुरोवेदाः पृष्ठतो में सशरंधनुः इसी प्रकार आप का भी जीवन सदैव वेदत्व के लेखन एवं प्रचार में ही व्यतीत हुआ लेखनी के द्वारा आपने पत्रिकाओं में लेख लिखें पुस्तकें लिखी वहीं अपनी वाणी द्वारा प्रचार में भी पूरे भारत वर्ष की पुण्यधरा पर जा जाकर अमृत वर्षा से आर्य जनों को तृप्त किया है। आर्य जगत के गौरव पं. प्रकाशवीर शास्त्री आपको अपने प्रत्येक आर्य महासम्मेलनों में बुलाकर आर्यो पर कृपा करते थे आप भी उनके निमंत्रण को सहज ही स्वीकार कर लिया करते थे मैंने आपके दर्शन सर्वप्रथम मेरठ के आर्य महासम्मेलन में किये आपके प्रवचन का प्रथम वाक्य ही सभी को प्रभावित करता था और अंतिम वाक्य तक श्रोता प्यासे चेतक की तरह आपकी ओर निहारते ही रहते थे कि कुछ और अमृत कण रूपी शब्द कर्ण गुहरों को तृप्त कर दें ऐसे तेजस्वी विद्वान का आज स्मरण करते हुए पुरानी स्मृतियां नवीनता में परिवर्तित हो रही हैं। एक बार आप आर्य समाज हापुड़ में वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर पधारें सायंकालीन सत्र में प्रतिदिन आपके दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ उठाते रहे एक दिन मैंने निवेदन किया कि समीप में ही गुरूकुल ततारपुर है यदि आपकी कृपा हो जाये तो अपने प्रिय ब्रह्मचारियों को अपना शुभाशीष प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त करायें। आप जब गुरूकुल में आये और गुरूकुल के छात्रों ने कहा कि हमें भी उपदेश सुनने का सौभाग्य मिलें ऐसा निवेदन करें मैंने प्रार्थना की तो बोले पहले छात्रों को सुनूगाँ तब सोचूँगा कि बोलूँ या न बोलूँ छात्र सभा हुई बाद में आपने कहा था कि मुझसे तो बड़ी भूल हो गई जो जीवन पर्यन्त पश्चाताप रहेगा सभी आश्चर्य चकित हो गए पुनः बोले कि मुझे तो यहां प्रथम दिवस ही आना चाहिए था ऐसे योग्य छात्रों को देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा और लगभग ४५ मिनट अपना उपदेश दिया। फिर डा. वाचस्पति जी उपाध्याय जो सं. सं. वि.वि. वाराणसी में प्रस्तोता अथवा कुलसचिव थे से कहा कि इस गुरूकुल को जरूर देखना और इसके लिए विशेष संस्तुति करता हूँ। डा. वाचस्पति उपाध्याय एक वर्ष पश्चात आये तब उन्होंने अपने संस्मरण में यह बात बताई इतने उदारमना विद्वान को भला कोई कभी भुला सकता हैं? आपकी आत्मीयता का परिचय देना अनिवार्य समझता हूँ आर्य समाज कलकत्ता के कार्यक्रम में जाने का सौभाग्य मिला अभी ३-४ वर्ष पूर्व की ही बात है स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती गुरूकुल गौतम नगर की कृपा से मुझे भी उड़ीसा और कलकत्ता देखने का सौभाग्य मिल गया वहां का भव्य कार्यक्रम देखकर मन मयूर प्रसन्न हो गया। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था अतः आपने सूचना देकर अपने ईशावास्यम कालिन्दी कुंज निवास पर बुलाया हमारी हार्दिक इच्छा पूर्ण हुई आपके दर्शनों से जो तृप्ति हुई वे सुखद क्षण जीवन का इतिहास बन गए। मैं एवं स्वामी प्रणवानन्द जी तथा ब्र. साथ थे। आपसे घर पर आशीर्वाद लिया और गुरूकुलों के प्रति आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों से आपको आहत देखा। स्वामी अग्निवेश जी का इस परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है उनके भी कुछ संस्मरण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्य संसार पत्रिका के सम्पादक के रूप में आप सदैव आर्य जनता को प्रेरणा प्रदान करते रहे। अभी आपका एक लेख प्रायः सभी आर्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ '' संसद की दीवारों का संदेश'' संसद भवन में प्रवेश करते ही आपको क्या पढ़ने का अवसर मिलेगा अन्दर भी क्या क्या उपदेश है यदि उनके ऊपर चिन्तन किया जाये और उन पर आचरण प्रारम्भ कर दे तो पुनः वीर विक्रमादित्य का राज्य भारतवर्ष की पुण्य धरा को प्राप्त हो सकता है। यह आपका ''दिव्य संदेश'' जीवन का अंतिम उपदेश बनकर मील का पत्थर हो गया है और आप भारतीय जनता एवं नेताओं के प्रति अपनी आत्मीयता से कैसा आदर्श देखना चाहते हैं यह भाव आपकी सात्विकता का प्रमाण है आर्य जनता सदैव आपकी ऋणी रहेगी। गुरूकुलों के छात्रों और आचार्यो के प्रति आपकी उदात्त भावना कि हम ब्रम्हचारी है महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करना है तो सर्वप्रथम अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करके व्याकरण का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं अपितु दर्शनों के प्रति साहित्य के प्रति अपनी पकड़ हो और वेदों के प्रति आस्था और विश्वास हो वेद पाठ के साथ साथ भाष्य को भी पढ़ाने की व्यवस्था हो यह आपकी प्रत्येक गुरूकुल में योग्यता के लिए भावनात्मक इच्छा श्रेष्ठता का प्रतीक है उनके स्वप्नों का भारण उनके स्वप्नों का गुरूकुल, उनके स्वप्नों का आर्य समाज बन जायें तो पुनः आर्यावर्त विश्वगुरू की पदवी को प्राप्त कर सकता है। आज समय है वातावरण है और सरकार का भी इस दिशा में सत्प्रयास है किंचित प्रयास से सफलता शीघ्र ही संभव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के प्रारम्भ में जो श्लोक लिखा है वह आपके जीवन पर सार्थक हो रहा है-

विद्या विलास मनसो घृतशील शिक्षा
सत्यव्रता रहित मानमल्लापहाराः
संसार दुःख दलनेन सुभूशिताये
धन्या नराः विहित कर्म परोपकाराः।

आपने अपने जीवन में सदैव विद्या विलासी बनकर सरस्वती की उपासना की है सदैव शील स्वभाव में दीक्षित होकर सत्याचरण से जनमानस को अपनी शिक्षा से शिक्षित करते रहे संसार से अज्ञान रूपी दुख को दूर करने के लिए आपकी तपस्या आपके सुशिष्यों को कुन्दन बनाने में सफल रही है। ऐसे परोपकारी जो सदैव मान अपमान से ऊपर उठकर मात्र दूसरों की भलाई में लगे रहे ऐसे धन्य महापुरूषों में आपकी गणना की जाती रही है क्योंकि आपमें समुद्र की तरह गंभीरता थी चन्द्रमा की तरह शीतलता एवं पृथिवी के क्षमागुंण को सदैव धारण करते रहे, सूर्य की तेजस्विता एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान के प्रकाश का सम्बल लेकर चलने वाले पुरोधा आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों की श्रेणी का सम्मान प्राप्त किया। आपका परिवार पौरोहित्य परम्परा से जुड़ा हुआ था चाहते तो इसी से अपार सम्पदा को अर्जित कर सकते थे लेकिन आर्य समाज की विचार धार को सदैव ध्यान में रखते हुए आर्य समाज की गरिमा को बढ़ाया और अपने प्रवचन उपदेश द्वारा आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया। शिक्षण कार्य से बचे हुए समय को लेखन में सदुपयोग किया जिससे भावी पीढ़ी उनके ज्ञान से लाभान्वित हो सके आपके साहित्य की सूची को देखकर मन आपके प्रति श्रद्धावनत हुए बिना नहीं रहता वैदिक साहित्य में वेद मंजरी जैसे अमूल्य ग्रंथ है महर्षि दयानन्द जी के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को सरलता से समझाने के लिए ग्रंथ लिखा आपका वृहद पुस्तकालय जैसे किसी संस्था का पुस्तकालय होता है वहीं बैठकर अपनी साहित्य साधना से आपने जो तपस्या की है आर्य जगत उसका सदैव ऋणी रहेगा। आर्य संसार पत्रिका का सम्पादन भी प्रत्येक मास आपके ही द्वारा सम्पन्न होता रहा इतने लम्बे समय तक आर्य जगत् एवं आर्य समाज कलकत्ता आपके द्वारा उपकृत हुआ है उसे कैसे भुलाया जा सकता है। आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के पुरोधाओं में आपका नाम श्रद्धा और सम्मान से स्मरण किया जाता है आपका अभाव दीर्घकाल तक आर्य जगत् अनुभव करेगा। परिवार में भी यही स्थिति अनुभव की जा सकती है। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. इस अभाव को सदैव स्मरण करती रहेगी। मैं उनके आत्मीय परिवार के प्रति अपनी ओर से गुरूकुल पूठ परिवार एवं उ.प्र. सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करता हुआ प्रभू से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें इस आध्यात्मिक दुःख में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें तथा उनकी पवित्र आत्मा मोक्ष प्राप्त करने की अधिकारी बने। आर्य समाज में उनके अभाव को दूर करने के लिए वैदिक विद्वान तैयार करने की योजनायें प्रारम्भ की जाये यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरूकुल पूठ-हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र.
६८३७४०२१६२

वसुधैव कुटुम्बकम् बनाम विश्व एक नीडम्

देवनारायण भारद्वाज

'अमेरिका निवासी भगिनी तथा भ्रातृगण!' यह उस अंग्रेजी सम्बोधन का हिन्दी रूपान्तर है जो स्वामी विवेकानन्द ने ११ सितम्बर १८९३ को शिकागो की सर्वधर्म सभा में उच्चारित किया था। उन्होंने नारियों को पहला स्थान देते हुए सारे विश्व को अपना कुटुम्ब मानकर जो यह सम्बोधन किया था, उसका तालियों की तुमुल ध्वनि के मध्य देर तक स्वागत हुआ था। स्वामी जी को बड़ी कठिनाई से हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रो. राइट के सद्प्रयास से इस सभा में प्रवेश मिला था। विश्वबन्धुत्व पूर्ण इस सम्बोधन ने ऐसी धाक जमाई कि उनकी सभी वकृताएं श्रद्धाकर्षण का केन्द्र बनकर वैदिक धर्म के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नाम को गुञ्जायमान करती चली गई। सत्रह दिनों तक चले इस सर्व धर्म सम्मेलन में फिर तो उनके अनेक व्याख्यान हुए। उन्होंने वैदिक र्ध शास्त्रों के आधार पर एक परमेश्वर की परम सत्ता को निरूपित किया। एक ही ज्योति भिन्न-भिन्न रंग के कांच में विभिन्न रंग प्रकट होती है। हर धर्म के मनुष्य के अन्तस्तल में उसी एक सत्य का राज है।

यह तो रही बात उस सन्त की, जिसने भारत से विदेश में जाकर विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रंग में रंग दिया। अब सुनिए बात उस सन्त की, जो भारत को अपने रंग में रंगने आया था, किन्तु रंग गया भारत के रंग में, ईसाई धर्म का सन्देश भारत में फैलाने के लिए बेल्जियम में एक मिशनरी का निर्माण किया जा रहा था। इसीलिए वह अपने विद्यार्थी जीवन में एक दिन विश्व-साहित्य का अध्ययन करने बैठ गया। रामचरित मानस की कुछ चौपाइयों ने उसके मस्तिष्क के कपाट ऐसे खोल दिए कि वह राम की वैश्विक संस्कृति का प्रवक्ता बन गया।

धन्य जनम जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू।।

चारि पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके।।

इन चौपाइयों में निहित कुल पिता एवं कुलसपूत के मार्मिक स्नेह-सम्बन्ध की झलक ने उसके मन को ऐसा मोहित किया कि यही रेवरेंड फादर कामिल बुल्के वर्ष १६३५ में आए तो थे भारत में ईसाई धर्म व सभ्यता के प्रचार के लिए, किन्तु समर्पित हो गए तुलसीकृत रामचरित मानस के अध्ययन-मनन एवं अनुसन्धान के लिए। एक बार ब्रिटेन से भारत आए एक ईसाई धर्म प्रचारक ने उनसे पूछा-आपको ईसा के सन्देश के लिए भारत भेजा गया था, किन्तु यहां आकर आप श्रीराम के प्रशंसक बन गए और तुलसी साहित्य के प्रचार में लग गए। आपको तुलसीदास की किस बात ने सर्वाधिक प्रभावित किया है ?कामिल बुल्के ने उत्तर दिया- '' तुलसीदास के अनुसार नैतिकता के अभाव में भगवद्भक्ति नितान्त व्यर्थ है, वह भगवद्भक्ति ही क्या, जो मनुष्य को सुदृढ़ कदमों से नैतिकता की ओर अग्रसर न कर दे! उन्होंने आगे कहा मैं राम के हृदय की करूण-भावना, उनके नैतिक मूल्यों के अनुकरण, उनकी विनयशीलता के मोहपाश में ऐसा जकड़ चुका हूँ कि अब उससे अपने को अलग नहीं कर सकता। स्वामी जी व फादर ने सम्पूर्ण वसुधा को एक कुटुम्ब ही नहीं, वेदानुसार अखिल विश्व को एक नीड़ का निवासी अनुभव किया है।

अर्थात् तत्सत् ईश्वर ही एक ऐसा आश्रय है जिसमें सारा संसार समाया हुआ है। यह जगत् उसी से प्रकट या उसी में सिमटता रहता है। वही परम देव परमपिता-परमात्मा सभी प्रजाओं में ताने-बाने की भांति ओत-प्रोत हो रहा है, इतनी समीपता होते हुए भी वह सबके देखने में नहीं आता, कोई सूझबूझ वाला ज्ञानवान् उसे अपने हृदय की गुफा में देख पाता है। (यजु. ३२.८), ईशोपनिषद् में ''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्'' (यजु. ४०.१)। समस्त जगत् के कण-कण में ईश्वर का वास बताया गया है, जबकि उपरोक्त मंत्र में ईश्वर को ही सम्पूर्ण जगत् का नीड़ अथवा आश्रय स्थल बता दिया है। वही जानकार अनुभवी है जो उक्तानुसार जीव, जगत् व जगन्नियन्ता के सम्बन्ध को समझ लेता है। (अथर्व. १.१८.३२)

ज्ञानी विद्वान वही है जो परमपुरुष परमेश्वर को सबसे बड़ा ऐश्वर्यशाली सर्वोपरि मानता है, और समझ लेता है कि सभी देवता सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु, आकाश आदि दिव्य शक्तियां इसमें वैसे ही ठहरी हैं, जैसे गौएं सुखपूर्वक गोशाला में रहती हैं। सूक्ष्मदर्शी विद्वान् विश्व-ब्रह्माण्ड में व्याप्त विविधता को एक रूपता में देखने लगता है। (अथर्व २.१.१)

वह परम-ब्रह्म सूक्ष्म तो ऐसा है कि वह (गुहा) हृदय आदि का अन्तर्यामी है और स्थूल भी ऐसा है कि सकल ब्रह्माण्ड उसके भीतर समा रहा है। धीरध्यानी महात्मा उस जगदीश्वर की अनन्त रचनाओं से विविध आविष्कार व उपकारों को ग्रहण करते हुए भी उसी एक की स्तुति करते और ब्रह्मानन्द में मगन रहते हैं। इसी वैदिक मनीषा ने हमें शुचिता की राह इस प्रकार दिखाई है।

सबके प्रति अभेद दृष्टि को ज्ञान, विषयासक्ति रहित मन को ध्यान, मानसिक विकारों के त्याग को स्नान और अपनी इन्द्रियों के संयम को शौच कहा जाता है। साधक अपनी सन्ध्योपासना में इसी ध्येय से इन्द्रियों की पवित्रता के लिए मानसिक रूप से मार्जन करते हुए ''ओ महः पुनातु हृदये''-(स्कन्दोप. ११) पुनीत हृदय की महानता या विशाल हृदयता की अवधारणा बनाता है। संकुचित हृदय वाले अपने कुएं को समुद्र से भी बड़ा समझते हैं। विशाल हृदय वाला अपने छोटे से कुएं के मीठे जल से असंख्य पिपासुओं को तृप्त कर देता है, जो समुद्र के लवणीय पानी से कदापि सम्भव नहीं। शिकागो की उपरोक्त सर्वधर्म सभा में १५ सितम्बर १८९३ को ऐसा ही संयोग उपस्थित हो गया था, जब भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी अपने-अपने मत की प्रधानता का प्रतिपादन करने के लिए वितण्डावाद में जुट गये थे, तब स्वामी विवेकानन्द ने एक कहानी सुनाकर सभी को शान्त कर दिया। उन्होंने सुनाया कि एक कुंए में बहुत समय से एक मेंढक रहता था। वह वहीं पैदा और वहीं उसका पोषण हुआ और मोटा ताजा हो गया। होते-होते एक दिन दूसरा मेंढक जो समुद्र में रहता था, वहां आया और कुएं में गिर पड़ा। कूपमण्डूक ने उससे पूछा ''तुम कहां से आये हो?'' मैं समुद्र से आया हूँ उसने उत्तर दिया। समुद्र कितना बड़ा है ?क्या इतना ही बड़ा है जितना मेरा यह कुआं है ?यह कहते हुए उसने कुएं में छलांग मारी। समुद्र वाले मेंढ़क ने कहा, ''मेरे मित्र भला समुद्र की उपमा इस छोटे से कुएं से किस प्रकार दी जा सकती है ?तब उस कूपमण्डूक ने दूसरी छलांग मारी तथा पूछा-''तो क्या इतना बड़ा है?'' समुद्र वाले मेंढक ने कहा- कुएं की तुलना समुद्र से करना असम्भव है। अब तो कूपमण्डूक जी चिढ़कर बोले-''जा, जा! मेरे कुएं से बढ़कर और कुछ हो ही नहीं सकता। झूठा कहीं का! अरे इसे पकड़कर बाहर कर दो। स्वामी जी ने इस कथा के माध्यम से मतमतान्तरों की संकीर्ण भावना को उजागर कर दिया था।

रामायणकालीन भ्राताओं का अवलोकन करें तो बाली-सुग्रीव प्रतिशोधात्मक वानरी प्रकृति में, रावण-कुम्भकरण-विभीषण विरोधात्मक निशाचरी विकृति में और राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न सम्बोधात्मक वैश्वानरी संस्कृति में रचे-बसे दिखाई देते हैं।

अनुजवधू भगनी सुतनारी।
सुन सठ कन्या सम ए चारी।।

का उपदेश कर राम बाली को मार देते हैं। मरते-मरते भी बाली अपने पुत्र अंगद का हाथ राम के हाथ में थमा देता है। स्वर्णमयी सुविधा सम्पन्न लंका से पलायन कर विभीषण राम की शरण में आ जाते हैं। राम तब सर्व रामानुज भ्रातृत्व का श्रृंगार बनकर राज्य सिंहासन को गेंद की भान्ति ठुकराने में क्षण भर की देर नहीं लगाते हैं। सुनीति-मर्यादा से सकुल राम के कुल में गिरिवासी, वनवासी, ग्रामवासी, आश्रमवासी और गुफावासी सभी मिलने को आतुर दिखाई देते हैं, क्योंकि उन सबको लंकावासी विभीषण के शब्दों में व्यक्त प्रेरणा राम के चरित्र में झलकती दिखाई देती है।

श्रवण सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भञ्जन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर।।

शरीर क्रिया विज्ञान के अनुसार हर मनुष्य का हृदय आकार-प्रकार-कार्य व्यवहार में समतुल्य होता है, किन्तु भावनाओं की तरंगें ही उसे लघु अथवा विशाल बना देती हैं।

यादुशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।
(पञ्चतन्त्र)

अर्थात यही भावनायें ही मानव के लक्ष्य-सिद्धि की मूलाधार होती हैं। पण्डित विष्णु शर्मा ने अपने विश्व-प्रसिद्ध बोध-कथा ग्रन्थ 'पञ्चतन्त्र' में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की स्थापना बहुत ही सरल शैली में इस प्रकार की है :-

अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् अपने व पराये की गणना छोटे हृदय वाले करते हैं। उदात्त चरित्र वालों के लिये तो सारी वसुधा ही अपने कुटुम्ब के समान होती है। उन्होंने इसकी पुष्टि में जो कहानी सुनायी है, वह अत्यन्त मार्मिक व शिक्षाप्रद है। किसी नगर में चार ब्राह्मण पुत्र निवास करते थे। उनमें से तीन यद्यपि शास्त्रज्ञ थे किन्तु बुद्धिविहीन थे। शेष एक विद्वान तो नहीं था किन्तु लोक-व्यवहार में निपुण होने से बुद्धिमान माना जाता था। वे चारों धनोपार्जन के लिये यात्रा पर निकल पड़े। मार्ग में सबसे बड़े भाई ने विद्याविहीन होने के कारण छोटे भाई को आगे साथ ले जाने से मना कर दिया। दूसरे भाई ने भी बड़े भाई का समर्थन किया। दोनों ने सोचा कमायेंगे हम और खायेगा छोटा भाई। तब तीसरे भाई ने अपने दोनों बड़े भ्राताओं को समझाया। बाल्यकाल से हम सब साथ खेले-खाये हैं, फिर अपने ही काम आने वाली लक्ष्मी से क्या लाभ ?अपने पराये का विचार तो संकुचित भावना वाले करते हैं। उदार व्यक्तियों के लिए तो सारा विश्व ही अपना होता है-वह तो हमारा सहोदर भाई है। अगले दिन वे चारों वन के मार्ग से जा रहे थे, तो उन्हें हड्डियों का ढेर दिखाई दिया। एक भाई ने हड्डियों को व्यवस्थित कर पशु का कंकाल खड़ा कर दिया। दूसरे भाई ने अपनी विद्या के प्रभाव से उसमें चर्म, मांस व रक्त का संचार कर दिया। अपनी विद्या के गर्व में चूर तीसरा भाई उसमें प्राणों का संचार करने को उद्यत हुआ, तो चौथे भाई ने उसे रोकते हुए कहा, ''तुम लोग देख रहे हो, यह कौन सा जीव है?तुम लोग मरे हुए सिंह को जीवित कर रहे हो।'' तीसरा भाई कहने लगा, ''अरे मूर्ख! इन दोनों ने अपनी विद्या का चमत्कार दिखा दिया है। मैं भी अपनी विद्या को विफल नहीं होने दूंगा।'' चौथे भाई ने कहा, '' यदि यही बात है तो मुझे वृक्ष पर चढ़ जाने दो, फिर अपनी विद्या का प्रयोग करना।'' तीसरे भाई द्वारा प्राणों का संचार करते ही सिंह अंगड़ाई लेकर उठा और तीनों को अपने आहार का ग्रास बना लिया। बोध कथा का यही सन्देश है कि संकीर्ण भावनायें बसे बसाये परिवार का सर्वनाश कर देती हैं और उदात्त भावनाओं से सारा संसार ही अपना कुटुम्ब बन जाता है। इन उत्तुंग भावनाओं का अजस्र उत्स मानव हृदयस्थ वही प्रभु-नीड़ है, जिसके आश्रय में रहकर हम सभी सकारात्मक तरंगों के संस्पर्श से एक ही कुटुम्ब का अंग बन जाते हैं।

-वरेण्यम् अवन्तिका (ए.डी.ए.)
अलीगढ़-२०२००१(उ.प्र.)

विश्व संगठन के वैदिक आधार मैत्री और समता

-स्व.प्रो.उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त-''योग्यतम की जीत''। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल का राज करते हैं शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है। पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किंतु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है- ''अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः''। अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करूणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यो को पाया। वेद का मंत्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के ह्रदय में सत्य, करूणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार है।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्यौगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किंतु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अंतर्राष्ट्रीय संगठन का आधार ''उपनिवेशवाद'' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का गठन किया किंतु इस राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नर संहार का अत्यंत ह्रदय विदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागाशाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ बूझ , मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किंतु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैंड,फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार-वीटो संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें रूपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''क्रय शक्ति की समानता'' होना चाहिए। यह असमानता की भावना और

पृष्ठ.....१ का शेष

खड़ा कर दिया था। सन्यासी, वानप्रस्थी, उपदेशक व आर्य समाज के पदाधिकारी समर्पित भाव से कार्य करते थे।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी यदि भारत का राजनैतिक नेतृत्व आर्यो के हाथ में होता तो आज भारत की दुर्दशा, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास पाश्चात्य सभ्यता का बोल-बाला का न होता। हम इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहेंगे। भारत का नेतृत्व स्वार्थी अवसरवादी, अज्ञानी, अधार्मिक व्यक्तियों के हाथ चला गया और इसका सीधा असर आर्य समाज की प्रगति पर भी पड़ा।

उस समय के कार्यकर्ताओं को आर्य समाज के कार्यो के पश्चात जो समय बचता था उसे घर के कार्यो में लगाते थे ज्यादा समय आर्य समाज को देते थे। वर्तमान समय में आर्य समाजियों को अपने घर से जो थोड़ा समय बचता है उसे आर्य समाज में लगा रहे है, बिल्कुल कार्यप्रणाली उल्टी हो गयी है।

अब का आर्य समाज :

वर्तमान में आर्य समाजों के बिल्डिगों की तो दिनों दिन प्रगति हो रही है परन्तु आर्यो की दिनों दिन कमी हो रही है। अधिकांश आर्य समाजों व संस्थाओं में प्रभावशाली व्यक्ति महन्त बन कर बैठे है और आर्य समाज के बिल्डिगों की रक्षा व साप्ताहिक सत्संगों को ही आर्य समाज का कार्य समझ रहे है और कहीं कहीं तो पदाधिकारी ऐसे सज्जन है जिनको संध्या, हवन तक करना नही आता है।

सन्यासी वर्ग आश्रम में राज्य कर रहे है, उपदेशक अधिकांश व्यवसायी हो गये है। आपसी झगड़ों के कारण आर्यो के बच्चे तक साप्ताहिक सत्संगों में नही जा रहे है। प्रभावशाली व्यक्तियों का बोलबाला है और जो जमीन से जुड़े कार्यकर्ता या उपदेशक है उनकी उपेक्षा हो रही है।

आर्य समाज की प्रचार शैली बिल्कुल बदल गयी है निर्भीक स्पष्टवादी सन्यासी, उपदेशों की दिनों दिन कमी हो रही है। अन्धविश्वासों कुरीतियों का खण्डन करना बन्द हो गया है। आर्य पदाधिकारी मन्दिरों की चार दीवारी से बाहर निकलने को तैयार नहीं है। आर्य शिरोमणि नेतृत्व लगभग समाप्त सा है, आगे क्या कहूँ प्रत्येक सच्चा आर्य इस समय व्यथित है।

आर्य समाज के भविष्य की प्रगति की दिशा के सुझाव :-

१. आर्य सन्यासी एवं बानप्रस्थियों को आश्रमों से निकल कर जन-जन तक पहुँचना होगा।
२. उपदेशकों व भजनोपदेशकों व कार्य- कर्ताओं को मिसनरी होना पड़ेगा।
३. आर्य समाज को प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक, अन्धविश्वासों, पाखण्डों आदि का खुला खन्डन करना पड़ेगा और एक-एक विषय को प्रचार का माध्यम समय-समय पर सम्पूर्ण आर्य जगत अपनाये।
४. हमें सस्ता से सस्ता वैदिक साहित्य जन-जन तक पहुँचाना होगा।
५. आर्य समाज के तमाम शाखाओं को एक रूपता में एक-एक मुद्दे पर जैसे शराब, दहेज, भ्रूण हत्या, जाति प्रथा, पशुबलि, मृतक भोज आदि का विरोध प्रदर्शन करना होगा।
६. मीडियां पर ज्यादा से ज्यादा वैदिक सन्देश देने होंगे।
७. आज का नवयुवक प्रत्येक पाखण्ड को खत्म करना चाहता है किन्तु वह परिवार व अपने समाज से बन्धें हुए है इसलिये आर्य समाज को धर्म का सत्य स्वरूप जनता के सामने रखना होगा और कुरूतियों का खुला खन्डन करना होगा।
८. सार्वदेशिक सभा केवल एक हो और इस पर सन्यासियों का नियन्त्रण हो।
९. सार्वदेशिक सभा को व सम्पूर्ण आर्य जगत के बाद विवाद सुलझाने का एक सन्यासियों की धर्म सभा का गठन किया जाए।
१०. आर्य जगत के सम्पत्ति आदि के झगड़ों में कोर्ट कचहरी में व्यर्थ धन व्यय हो रहा है इन विवादों को आपसी सहमति से सुलझाना होगा। आर्य समाजों में फिक्स डिपोजिट खत्म करना होगा अपितु उस धन का प्रचार में व्यय करना होगा।

वैदिक प्रचारक गढ़ निवास, मोहकमपुर देहरादून (उत्तराखण्ड)

सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएं हैं। ये निर्बलताएं विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शो के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है- ''सर्वे भवन्तुः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्चन्तु , मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहां ऋषि सर्वसुख, सर्व कल्याण की भावना को प्रश्न देते हैं। वेद की दृष्टि में भूतमात्र से प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है। ''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।''

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु पक्षी संसार के सभी जीव जंतुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने। संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है- ''ऋगवेद का मण्डल मणि सूत्र।'' ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला सी मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अंतिम सूक्त का तीसरा मंत्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है-

''ओं समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तेमेषाम्।

समानं मंत्रमभि मन्त्रये वः। सामनेन वो हविषा जुहोमि।।'' मंत्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी समानता के आधार पर हो। यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

पी-३०, कालिन्दी हाउसिंग स्टेट,
कोलकाता-७०००८६

सेवा तथा सामाजिक उत्थान हेतु समर्पित-स्वामी सुमेधानन्द

डॉ. भवानी लाल भारतीय

क्या कोई मान सकता है कि हरियाणा के देहाती वातावरण में जन्मा, पला, बढ़ा बालक कालान्तर में ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की शिक्षा से प्रभावित होकर न केवल संस्कृत तथा वैदिक साहित्य का उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करेगा, किन्तु बुद्ध, शंकर, दयानन्द का आदर्श उपस्थित कर युवावस्था में सन्यास ग्रहण कर स्वयं को 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' प्रस्तुत करेगा अपितु पुत्र, लोक, वित्त इन त्रिविध एषणाओं से मुक्त होने के लिए कटिबद्ध हो जायेगा। यों तो सन्यासी का आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् होने के कारण समस्त धरती ही उसका कार्यक्षेत्र होता है तथापि इस युवा साधु ने समीपवर्ती राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर आदि जिलों को अपने कार्य के लिए चुना। मेरी उनसे पहली मुलाकात श्रीगंगानगर में आयोजित प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन में हुई जिसके वे संयोजक थे। यहां प्रान्त के अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। स्व० छोटु सिंह ने तो स्वामी जी की पगड़ी और उसके बांधने के स्टाइल को देखकर मुझसे कहा - भारतीय जी यह कोई वेशपन्थी यहां घुस आया ?मैंने कहा - अकारण कोई धारणा बनाना उचित नहीं। न लिंग धर्म कारणम् (मनु) मात्र बाह्य चिन्ह धर्म का लक्षण नहीं है। यह सेवा भावी, समर्पित आर्य सन्यासी हैं। इनका इस प्रान्त में आना शुभ है।

स्वामी सुमेधानन्द अब प्रमुखतः आर्य समाज और साथ ही आर.एस.एस. से जुड़े। उन्होंने राजस्थान के इस पश्चिमी अंचल में धर्म प्रचार, नशा, निवारण, कुरीतियों का मूलोच्छेद आदि अनेक रचनात्मक कार्य किये। अन्ततः उन्होंने सीकर के निकट पिपराली ग्राम को अपने कार्य के लिए उपयुक्त पाया और मुख्य राजमार्ग पर वैदिक आश्रम स्थापित कर सेवा और सामाजिक नव निर्माण का कार्य अधिक तीव्रता से आरम्भ किया। १९९७ में स्थापित यह आश्रम नशाबंदी के कार्यक्रम आयोजित कर युवकों में फैली इस बीमारी को दूर करने के लिए यत्नशील रहा। साथ ही प्रौढ़ शिक्षा, गौ सेवा, आयुर्वेद पर आधारित चिकित्सा, योग का प्रशिक्षण, अस्पृश्यता निवारण, भ्रूण हत्या विरोध, बाल विवाह उन्मूलन आदि रचनात्मक कार्य आरम्भ किये। कालान्तर में आप योग ऋषि बाबा रामदेव के कार्यक्रमों से भी जुड़े और यत्र तत्र व्याख्यान प्रवचनादि से जागृति उत्पन्न की।

आर्य समाज में आपकी गतिविधियां जिला स्तर से आगे बढ़ी। आपने प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री तथा प्रधान के पद पर कार्य किया, साथ ही आर्य समाज के वैश्विक संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी के रूप में दिल्ली के दयानन्द भवन से वैदिक धर्म प्रचार को प्रगति दी। कालान्तर में जब मा. भैरोसिंह शेखावत (तत्कालीन मुख्यमंत्री) के कार्यकाल में उदयपुर का नवलखा महल स्वामी दयानन्द के स्मारक के रूप में आर्य समाज द्वारा स्थापित ट्रस्ट को मिला तो उसके प्रमुख ट्रस्टी के रूप में आपने इस भव्य स्मारक के उत्तरोत्तर विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यों तो हम सन्यासी को श्रेयस्कामी, मोक्षपथ का अन्वेषक तथा सर्व संग परित्यागी मानते हैं, यह उचित भी है, तथापि यह भी स्मरण रखना होगा कि सेवा, परोपकार तथा समाज का हित चिन्तन भी सन्यासी का कर्तव्य होता है। विगत में दयानन्द, विवेकानन्द आदि उन चतुर्थाश्रमियों के उदाहरण हमारे समक्ष हैं जिन्होंने नर में नारायण को देखा और लोकहित को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वर्तमान में भी बिहार के स्वामी सहजानन्द, गोरखपुर की गोरस पीठ के विगत अधिष्ठाता महन्त दिग्विजयनाथ, तथा म. अवेद्यनाथ, वर्तमान में योगी आदित्यनाथ; आर्य समाज के स्वामी रामेश्वरानन्द, ब्यावर के स्वामी कुमारानन्द आदि विरक्त महात्माओं ने देश हित तथा समाज हित को सदा महत्व दिया।

स्वामी सुमेधानन्द भी इन्हीं महापुरुषों के पथ पर चल पड़े और आर्यसमाज, आर.एस.एस. तथा अन्य संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। इसी का परिणाम है कि सीकर जिलें की जनता ने आपको सांसद के गौरवमय स्थान पर पहुंचाया है। मैं व्यक्तिशः स्वामीजी के सम्पर्क में आया हूँ और मैंने अनुभव किया है कि जो सेवा और समाज के नव निर्माण का लक्ष्य लेकर वे अब वृहतर कर्म क्षेत्र में उतरे हैं, उसमें वे सफल होंगे। स्वामी जी वाणी तथा लेखनी दोनों माध्यमों से अपने विचारों को व्यक्त करने में व्युत्पन्न हैं और सर्वोपरि बात तो यह है कि किसान परिवार में जन्म लेने के कारण आम आदमी की समस्याओं से परिचित हैं।

३/५, शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में डा. श्वेतकेतु ने पढ़ा शोध पत्र

भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर द्वारा दिनांक ७-८ फरवरी २०१५ को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली के मंत्री व आयुर्वेद संस्कृत के विद्वान डा. श्वेतकेतु शर्मा जी ने संस्कृत भाषा में लिखा २२ पृष्ठों का ''वैदिक संस्कृत वांऽमये वैज्ञानिक शोध चिन्तन संस्कृत वैज्ञानिकों के समन्वय'' विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने सप्रमाण संस्कृत व वैदिक वांऽमय में वैज्ञानिक शोध पर बल दिया तथा उसे वैज्ञानिकों के बीच संस्कृत विद्वानों के साथ शोध करने की आवश्यकता को जरूरी बताया।

इस अवसर पर प्राचार्या डा. निरूपमा अशोक जी ने उन्हें दुशाला उढ़ाकर व स्मृति चिन्ह आदि देकर सम्मानित किया।

संगोष्ठी का संयोजन डा. पुष्पा मलिक ने किया व डा. निरूपमा अशोक ने आभार व्यक्त किया।

अमूल्य संदेश
वेद विद्या भारत की सनातन व शाश्वत विद्या है

काजी नुसरत इस्लाम

निर्भय विजय यात्रा के महायात्री थे प्राचीन भारतवर्ष के वैदिक ऋषिगण। उनकी जीवन यात्रा का अध्ययन करने से हमें यह दिखाई पड़ा है कि वे थे महावीर्यवान, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के पुजारी। इन्होने वीर्य के साथ सौन्दर्य का महामिश्रण किया था। इसीलिए वैदिक ऋषि ने बार बार कहा था- ''मधु माता ऋतायते,मधु क्षरन्ति सिन्धवः।।१/१०/६।। भारत के वैदिक ऋषियों ने वीर्य के जयगान की रचना की थी। उन्होंने वीरता के साहसिक अभियानों का संचालन किया था।

आज हम अत्यंत दुर्बल निःसहाय हो गये हैं। हमारे कर्मविमुख प्राणों में नई आशा का प्रकाश जलाने के लिए वेदविद्या की उस प्राचीन मर्यादा को वापस लाना होगा। नव जागरण के लिए भारत वर्ष में यह पूर्ण प्रदीप्त जीवन की प्रार्थना हमारे प्रतिदिन का स्वाध्याय बने, जिससे कि हम पुनः वेदपंथी बनकर अभ्युदय के पथ पर अपनी जय यात्रा जारी रख सकें।

वेद विद्या भारत वर्ष की एक सनातन व शाश्वत विद्या है। आद्विज चाण्डाल समस्त भारतवासी के घर घर में इस वेद वाणी का प्रचार कर सबको महान व पवित्र बनाना होगा, सबको पुनीत व शुद्ध करना होगा।

वेद विद्या सम्पूर्ण मानव की साधारण सम्पत्ति है। किसी का व्यक्तिगत अधिकार इस पर नहीं है। साम्य, समुदारता, जाति भेद की श्रृंखलाओं को तोड़ना और नर-नारायण के प्रति श्रद्धा ही वेद का मूल अर्थ हैं।

वेद के ऋषि ने अपने अमृत छन्दों में अमृतपुत्र विश्ववासी समस्त नर-नारायण को इस सुधा कलश की अमृतधारा का पान करने के लिए बार बार पुकारा है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, शत्रु-मित्र सभी को उस महान प्रज्ञा इस शक्तिशाली भाषा इस अथाह ज्ञान इस कल्याण वाणी का संदेश प्राप्त हो।

''यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय-चारणाय च।।
''यजु. २६/२

बारंबार वेद ऋषि के कंठ से यह महान प्रार्थना ध्वनित हुई है:-

''असतो मा सद्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
मृत्योर्मा अमृतं गमयः।''

घोर असत्य से उस परम सत्य कीओर गहन अंधकार से उस प्रदीप्त आलोक की ओर, मृत्यु के गहवर से उस अमृतमय पुनर्जन्म की ओर जाना ही मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी साधना है।

हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मो के अनुयायियों को यदि हम एकात्म रूप से देख सकें सभी को यदि अमृत के पुत्र के रूप में ग्रहण कर तब ही हम अपने को वेदपंथी कहला सकेंगे। अर्थात् यही वेदों का मूलतत्व है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है- ''सीमार माझे असीम तुमि बताओ आपन सुर'' (अर्थात् हे असीम सीमा के अन्दर तू अपनी रागिनी सुना।'') ईश्वर असीम व अनन्त है, वे अखण्ड मंडलाकार सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है। धर्म के दायरे के अन्दर, साम्प्रदायिकता के नाग पाश में उनको नहीं बांधा जा सकता। अतः साम्प्रदायिकता व धर्मान्धता को भुलाकर। शताब्दियों की मृत्यु जड़ता को दूर कर, हमें वेदों के उद्दीप्त आह्वान से विकसित हो उठना होगा, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

(आनन्द बाजार मासिक पत्रिका (बंगला दैनिक) में श्री जितेन्द्र बन्द्योपाध्याय द्वारा अनुदित, कविपुत्र काजी सव्यसाची के सौजन्य से प्राप्त)

(हिन्दुस्तान से साभार)

वाजपेय यज्ञ
यजुर्वेद नवम अध्याय की शतपथ ब्राह्मण में की गयी व्याख्या

- कृपाल सिंह वर्मा

उपनिषद् ग्रन्थ वेदों की आध्यात्मिक व्याख्याएं हैं। स्मृति ग्रन्थ वेदों की आधिभौतिक अर्थात् सामाजिक व्याख्याएं हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों की आधिदैविक अर्थात् वैज्ञानिक व्याख्याएं हैं।

शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के मंत्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की गयी है। शतपथ ब्रह्मण में युजर्वेद के नवम अध्याय को वाजपेय यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अग्नि, विद्युत तथा सूर्य का उपयोग दिव्य शक्ति प्राप्त करने के लिए करना ही वाजपेय यज्ञ है। इन प्राकृतिक शक्तियों का विशेष वर्णन धनुर्वेद में रहा होगा। वाजपेय यज्ञ करने से शक्तिशाली होकर राजा सम्राट हो जाता है अग्नि, इन्द्र (विद्युत) तथा सूर्य की शक्ति का उपयोग विभिन्न प्रकार के शक्तिशाली शस्त्रों के निर्माण में करना ही वाजपेय यज्ञ है।

१. ''देवः सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्व केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचः न स्वदतु स्वाहा।'' (यजु० ६-१)

अर्थ - (शतपथ ब्राह्मण काण्ड - ५ अध्याय -१, ब्राह्मण-१, कण्डिका - १६)

परमात्मा उपदेश करता है कि हे मनुष्यों सूर्य देवता आपको यज्ञ करने के लिए प्रेरित कर रहा है। देखो! शक्तिशाली सूर्य किरणें पृथिवी रूपी वेदी पर आहुति के रूप में गिर रही हैं। इनसे विभिन्न प्रकार के अन्न, विभिन्न प्रकार के पदार्थ उत्पन्न हो रहे हैं। ये अन्न आदि पदार्थ तुम्हें शक्ति प्रधान करेगें। तुम लोग भी इस प्रकार विभिन्न प्रकार के शक्तिदायक पदार्थ ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए उत्पन्न कर सकते हो। इस प्रकार के पदार्थो के विज्ञान को जानने से आपकी बुद्धि पवित्र होगी।

२. ध्रुव संदं त्वा नृषदं मनः सदमुपायम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा।
जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमाम्।।'' (यजु. ६-२)

अर्थ - (ब्राह्मण - २ कण्डिका - ४)

यह इन्द्र अर्थात् विद्युत शक्ति इस पृथिवी लोक में पायी जाती है। ''ध्रुवं इयं पृथिवीम्'' यह पृथिवी ही ध्रुव है। यह शक्ति प्राणों के रूप में मनुष्यों में पायी जाती है। मन से संकल्न - विकल्प भी आत्मा प्राण शक्ति से ही करता है। इस विद्युत शक्ति को विज्ञान एवं उपाय द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इस विद्युत शक्ति का स्थान ये पृथिवी है। इसके युक्तिपूर्वक उपयोग से तुम शक्तिशाली बन सकते हो।

३. ''अप्सुषदं त्वा घृतसदं व्योमसदमपजायाम गृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृहणाम्येषते योनिः इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। (यजु. ६-२)

अर्थ - (ब्राह्मणा-२, कण्डिका-५)

वह विद्युत शक्ति जल में निवास करती है। घृत में निवास करती है अर्थात् विभिन्न रासायनिक क्रियाओं से अभिव्यक्त होती है। वह अन्तरिक्ष में स्थित बादलों में अभिव्यक्त होती है। उस शक्ति को आप विज्ञान तथा उपायों से प्राप्त कर सकते हैं। उस इन्द्र अर्थात् विद्युत का उपयोग आप लोग किसी भी युक्ति से शक्ति तथा समृद्धि बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। उस इन्द्र को प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठतम वैज्ञानिक यज्ञ अर्थात् वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करें।

४. ''पृथिवसदं त्वाऽन्तरिक्षसदं दिविसदं देवसदं नाकसद मुपायम
गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाभ्ये ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।''

अर्थ- (ब्राह्मण-२, कण्डिका-६) (यजु. ६/२)

पाठक विद्युत को पुकराते हुए कहता है -

''पृथिवी आसन वाले तुझको, अन्तरिक्ष आसन वाले तुझको, द्यौलोक आसन वाले तुमको, देव आसन वाले, स्वर्ग आसन वाले तुझको, विद्युत शक्ति में मैं उपायों से तुझे ग्रहण करता है तथा श्रेष्ठतम् शक्ति व समृद्धि प्राप्त करने के लिए तेरा उपयोग करता हूँ।

५. ''अपां रसमुदवयं सूर्येसन्तं समाहित अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युतमुपायम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।'' (यजु. ६/३)

अर्थ- (ब्राह्मण-२, कण्डिका - ७)

विद्युत प्राण वायु है। यह जलों का रस अर्थात् जलों का बल है।

''जलों के बल प्रद रस सूर्य में ठहरे हुए हैं। जलों के रस का जो उत्तम रस है, उसको मैं तुम्हारे लिए ग्रहण करता हूँ इन्द्र के लिए तुझको ग्रहण करता हूँ। यह तेरी योनि अर्थात् - कारण है। तुम सबसे उपयुक्त को इन्द्र के लिए।'' यह जो विद्युत है यह जलों का रस है। यह सूर्य में समाहित है। इस विद्युत शक्ति को मैं सूर्य किरणों से प्राप्त करता हूँ।

६. ग्रहाः ऊर्जाहुतयः व्यन्तो विप्राय मति।
तेषां विशिप्रियाशां वोऽहम इषम् ऊर्ज समग्रभं उपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणामी एषः ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् इति सादयत्यूम्वै रसो रसमे वैतेनौज्जयति'' (यजु. ६/४ पाठान्तर)

अर्थ - तुम ऊर्ज आहुति वाले ग्रह विप्रो की मति उभारने वाले हो। तुमसे रस अर्थात् विद्युत शक्ति को ग्रहण करता हूँ। इन्द्र (विद्युत शक्ति) के लिए तुमको ग्रहण करता हूँ। यह ग्रह विद्युत शक्ति की योनि अर्थात् कारण हैं। इन्द्र के लिए उपयुक्त तुझको।

(हमारी पृथिवी एक चुम्बक है। इसी प्रकार सभी ग्रह चुम्बक है। इन सबके चुम्बकीय क्षेत्र है। प्रत्येक ग्रह अपनी कीली पर घूमता है तथा अपने सूर्य के चारों ओर घूमता है। इसलिए सभी के चुम्बकीय क्षेत्र गतिशील है तथा सूर्य किरणों की विद्यमानता में एक दूसरे को काटते रहते है। इसलिए पृथिवी लोक, अन्तरिक्ष लोक तथा द्यौ लोक में विद्युत आवेश उत्पन्न होता है। जैसे ऋग्वेद में कहा है - ''इन्द्र सूर्य अरोचयत्'' विद्युत सूर्य को प्रकाशित करती है। इसी प्रकार विद्युत अन्तरिक्ष स्थित बादलों को भी प्रकाशित करती है। नक्षत्रों से विद्युत उत्पन्न होती है। इसी विधि से डायनमो बनाकर हम भी विद्युत शक्ति को प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार वाजपेय यज्ञ के द्वारा वाज को प्राप्त कर हम वाजी बन सकते है। ये पाँच वाजपेय ग्रह के मंत्र है। (२ से ६ तक)। इन यजुर्वेद के मंत्रों के विज्ञान को जानकर वैज्ञानिक युक्तियों से हम शक्तिशाली बन सकते है तथा राष्ट्र को भी शक्तिशाली बना सकते है। इस प्रकार विद्युतशक्ति, अग्निशक्ति तथा सूर्यशक्ति प्राप्त करना ही वाजपेय यज्ञ का लक्ष्य है।

२५३, शिवलोक
कंकर खेड़ा, मेरठ
मो. ६६२७८८७७८८

सुनो केजरीवाल! काम करके दिखलाना

पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्साचार्य

कहते आए, जगत में, योगी गुनी महान।
मिट जाते हैं एक दिन, जो करते अभिमान।।
जो करते अभिमान, अन्त में वे पछताते।
मिलते हैं प्रमाण, कभी वे सुख ना पाते।।
धन बल पाकर ठीक नहीं, मित्रो! बौराना।
अभिमानी से दूर भागता, सदा जमाना।।

नरेन्द्र मोदी देश में, नेता है गुणवान।
अमित शाह उसका सखा, बनता चतुर सुजान।।
बनता चतुर सुजान, बड़ा बनता स्वाभिमानी।
हुआ दम्भ में चूर, बड़ी की है नादानी।।
किरण वेदी को साथ, लगा करके हर्षाया।
कार्यकर्ता रूष्ट किए, निजि वजन घटाया।।

दिल्ली जनता पार्टी के नेता नादान।
प्रमादी सब बन गए, भूल कर्म प्रधान।
भूल कर्म प्रधान, भाग्यवादी बन बैठे।
भूल गए कर्तव्य, स्वार्थ में पगले ऐंठे।।
सब कुछ मोदी मान, न की जनता की सेवा।
फेर क्यों मिलती इन्हे, सुयश की पावन मेवा ।।

अरविन्द केजरीवाल ने, किया रात-दिन काम।
दिल्ली वासी लग गए, उसके साथ तमाम।।
उसके साथ तमाम, कष्ट वह भारी पाया।
सहा बड़ा अपमान, बहादुर ना दहलाया।।
मेहनत का फल मधुर, मनुष्य को ईश्वर देता।
बदले में भगवान, किसी से कुछ ना लेता।।

दिल्ली की जनता बड़ी! समझदार होशियार।
अरविन्द केजरीवाल को, दिया निराला प्यार।।
दिया निराला प्यार, गजब की जीत दिलाई।
सब जन-सेवक बनों, अनोखी सीख सिखाई।।
सुनों केजरीवाल! काम करके दिखलाना।
अगर न दोगे ध्यान, पड़ेगा फिर पछताना।।

जगत गुरु दयानन्द की, शिक्षाएं लो मान।
हो जाएगा आपका, फिर निश्चित कल्याण।।
फिर निश्चित कल्याण, करेगा जग का स्वामी।
दयासिन्धु जगदीश, न्यायकारी जो नामी।।
प्रभु को रखना याद, मौज मारोगे भारी।
श्रीमान जी बनो, तपस्वी, परोपकारी।।

आर्य सदन, वहीन जनपद पलवल (हरियाणा) मो.०१६८१३८४५७७४

दयानन्द सरस्वती के आदर्शो पर चलें

गुलावठी,स्थानीय आर्य कन्या इंटर कालेज परिसर में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिन के अवसर पर यज्ञ आयोजित किया गया। यज्ञ नरेन्द्र बाबा ने सम्पन्न कराया। इस मौके पर आर्य समाज के मंत्री सुनील कुमार गोयल ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना हमारे कल्याण के लिए की। हम सभी उनके आदर्शो पर चलें तथा उनके जीवन से प्रेरणा लें। ग़ोयल ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव समाज की उन्नति के लिए कार्य किये। संजीव गोयल एवं प्रधानाचार्या दीप्ति सिंह ने भी विचार रखें। इस मौके पर सभी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शो पर चलने का संकल्प लिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म जयन्ती के अवसर पर विशेष यज्ञ कार्यक्रम

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद मथुरा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर दिनांक १४ फरवरी २०१५ स्थानीय होली गेट मथुरा में दोपहर २ बजे विशेष यज्ञ व प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यज्ञ के यजमान श्री श्याम बिहारी शास्त्री व ब्रह्मा डा. गोपी राम गुणी जी थे।

यज्ञ की समाप्ति के पश्चात कार्यक्रम के उप संयोजक श्री श्याम बिहारी शास्त्री ने अपने उद्बोधन में यज्ञ की महत्ता बताते हुए ऋषि दयानन्द को भारत रत्न दिये जाने की मांग केन्द्र सरकार से की। यज्ञ के ब्रह्मा डा. गुणी राम जी ने यज्ञ के माध्यम से भारतीय संस्कृति व संस्कारों को उन्नत बनाने की बात कही।

अंत में कार्यक्रम के संयोजक तथा अध्यक्ष श्री महावीर सिंह आर्य ने सभी को धन्यवाद दिया।

श्याम बिहारी शास्त्री
उप संयोजक

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र १० मार्च, २०१५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१३-१५

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

वेद प्रचार एवं वार्षिक सम्मेलन

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं ऋषिबोध पर्व पर आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर कार्यक्रम आयोजित किये गए जिसमें सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने वहां पहुंचकर प्रवचन उपदेश एवं अपना सन्देश दिया-

१- आर्य समाज कपासी, अमरोहा, ठाकुर सिंह आर्य-संयोजक
२- आर्य समाज सीतादेई, हापुड़, जगवीर सिंह, हरवीर सिंह-संयोजक
३- आर्य समाज बछलौता, हापुड़, रणवीर सिंह निरंजन सिंह-संयोजक
४- आर्य समाज छपकौली, हापुड़, सतगुरू आर्य, जितेन्द्र सिंह, संयोजक
५- आर्य समाज हापुड़, विजेन्द्रआर्य, प्रेम प्रकाश आर्य, संयोजक
६- आर्य समाज खुर्जा, बल्देवाश्रम बुलन्द शहर, डॉ. धीरज सिंह एवं आचार्य अरविन्द आर्य
७- आर्य समाज जवां-बुलन्दशहर, वीरेन्द्र रत्नम्, म. कड़कदेव आर्य,
८- आर्य समाज मेकपुर बुलन्द शहर पवित्रा आचार्या के भजन हुयें
९- आर्य कन्या डिग्री कालेज खुर्जा, बुलन्द शहर

इसका संयोजन डॉ. धीरज सिंह आर्य की ओर से हुआ, जनता पर भारी प्रभाव पड़ा।

-रणधीर कुमार शास्त्री
वेद प्रचार अधिष्ठाता

शुभ विवाह पर शुभाशीर्वाद

१- सत्येन्द्र सिंह आर्य सुपुत्र का विवाह संस्कार, सादुल्लापुर गढ़, हापुड़
२- हरपाल सिंह सुपौत्री का विवाह संस्कार, मोजपुर मोदीनगर, गाजियाबाद
३- रणजीत सिंह आर्य सुपुत्र का विवाह संस्कार, पसवाड़ा गढ़, हापुड़
४- सुखमुनि के सुपुत्र जितेन्द्र आर्य का विवाह संस्कार, फोन्दापुर मजरौला, अमरोहा

अरविन्द आचार्य
गुरूकुल पूठ, हापुड़

शोक सन्देश

- आर्य समाज ततारपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष राजपाल सिंह फौजी के भतीजे कुँवरपाल सिंह, ए. डी.ओ. के पुत्र अमरजीत सिंह आर्य का अचानक हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया उसकी आयु २६ वर्ष की थी। आर्य समाज की ओर से शान्ति यज्ञ किया गया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की।
- गुरूकुल ततारपुर के अध्यक्ष एवं इफ्को निर्देशक चौ. शीशपाल सिंह अदूटा के भतीजे गुरूमीत सिंह आर्य पुत्र पीतम सिंह का देहावसान सड़क दुर्घटना में हो गया वे २७ वर्ष के थे परिवार में एवं क्षेत्र में शोक लहर दौड़ गई शान्ति यज्ञ किया गया सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने पहुंच कर शोक संवेदना व्यक्त की।
- सुबोध शर्मा के भाई प्रदीप शास्त्री डां. श्रीपाल शर्मा आ.स. पिलखुवा की असामाजिक तत्वों ने गोली मारकर हत्या कर दी स्वामी जी ने घर पर पहुंच कर सान्त्वना व्यक्त की।
- अमरपाल सिंह, नितिन आर्य के पिता जी अक्खापुर गढ़ हापुड़ निवासी का देहावसान हो गया-अरविन्द आचार्य गुरूकुल पूठ ने पहुंचकर शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया सभी के लिए आर्य मित्र परिवार की ओर से शोक संवदेना व्यक्त की।

स्वामी वृहदानन्द सरस्वती

-दिनेश कुमार शास्त्री
गुरूकुल पूठ, हापुड़

आर्य समाज दतियाना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दतियाना मुजफ्फरनगर का ७४वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १ से ३ मार्च १५ तक मनाया गया। जिसमें नित्य प्रातः ७:३० से ९:३० बजे तक यज्ञ प्रवचन। मध्यान्ह १ से ५ बजे तक भजन प्रवचन तथा रात्रि ८:३० से ११ बजे तक प्रवचन हुये। इस अवसर पर वैदिक विद्वान डा. धीरज कुमार शास्त्री, स्वामी सत्यवेश जी, आचार्य वृहदानन्द के उपदेश एवं भजनोपदेशक सहदेव सिंह बेधड़क, पं. योगेशदत्त आर्य बिजनौर एवं रवीन्द्र सिंह, श्री ब्रह्मानन्द जी के भजनोपदेश हुये। श्रेत्रीय आर्य नर नारी इस शुभ अवसर का लाभ उठावें। उत्सव के अन्तिम दिन आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने पहुंच कर जन सामान्य को वैदिक धर्म की विशेषता बताकर उसे अपने जीवन में उतारने का सन्देश दिया। सुखवीर सिंह शास्त्री, कार्यक्रम संयोजक।

आर्य समाज खलासी लाइन में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज खलासी लाइन सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर में दिनांक १७ फरवरी १५ को ऋषि बोधोत्सव पर्व सोल्लास सम्पन्न हुआ। प्रातः वेद विदुषी श्रीमती मीना वर्मा के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ अनन्तर वैदिक विद्वान डा. धीरज कुमार आर्य ने महर्षि दयानन्द ने जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज रायपुर (धीरपुर) दातागंज बदायूँ का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रायपुर (धीरपुर) दातागंज बदांयू का २१वां वार्षिकोत्सव दिनांक २५ से २७ फरवरी २०१५ तक समारोह सम्पन्न हुआ। जिसमें नित्य प्रातः ८ से ११ बजे तक यज्ञ व वेद कथा मध्यान्ह २ से ५ बजे तक भजन उपदेश एवं सायं ८ से ११ बजे तक भजन उपदेश हुये। जिसमें आचार्य विजयदेव गुरूकुल कोठरा के उपदेश एवं पं. उदयराज आर्य भजनोपदेशक के भजन हुये। जिससे श्रोताओं ने लाभार्जन किया।

प्रधान आर्य समाज
रायपुर धीरपुर दातागंज, बदांयू

आर्य मनीषी श्री जयचन्द्र गुप्त की स्मृति में वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज शहर झांसी तथा जिलोपसभा झांसी के पूर्व प्रधान स्व. जयचन्द्र आर्य पूर्व संचालक दैनिक जागरण झांसी की पुण्य स्मृति में दिनांक १२ जनवरी से १४ जनवरी २०१५ तक आर्य समाज शहर झांसी में वेद पारायण यज्ञ किया गया। जिसका सम्पूर्ण व्यय भार दैनिक जागरण परिवार झांसी ने उठाया। यज्ञ में दैनिक जागरण के प्रबंध सम्पादक राजेन्द्र गुप्त यज्ञमान बनें। वक्ताओं ने स्व. जयचन्द्र जी आर्य के आर्य समाज के प्रति समर्पित जीवन पर प्रकाश डाला और सभी को आर्य समाज के प्रति समर्पण भाव अपनाने का संदेश दिया।

झांसी में ऋषि बोध पर्व सम्पन्न

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी के तत्वावधान में ऋषि बोधपर्व आर्य समाज मंदिर सदर बाजार, झांसी में मंगलवार दिनांक १७.२.२०१५ को जिले की सभी आर्य समाजों द्वारा सामूहिक रूप से आयोजित किया गया। प्रातः १० से ११ बजे तक यज्ञ आर्य पुरोहित श्री देवव्रत आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया जिसके मुख्य यजमान जिलोपसभा के उप प्रधान श्री चन्द्रदेव लिटोरिया रहे। प्रातः ११ से अपरान्ह १ बजे तक भजन तथा प्रवचन हुए।

वेदारी लाल आर्य, झांसी

पूर्व वरिष्ठ उप प्रधान पं. लक्ष्मण कुमार शास्त्री को भावभीनी श्रद्धांजलि

८ फरवरी रविवार, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के पूर्व वरिष्ठ उप प्रधान एवं पूर्व कुलपति गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन की सोलहवीं पुण्य तिथि एवं आर्य स्त्री समाज सीसामऊ कानपुर की पूर्व प्रधाना श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री की चौथी पुण्यतिथि पर उनके निज आवास ११७/४८६, पाण्डु नगर, कानपरु में यज्ञ किया गया, गणमान्य आगन्तुकों ने श्रद्धांजलि दी।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग सभा की साधारण बैठक दिनांक ०५ अप्रैल, २०१५ दिन-रविवार, तद्नु बैशाख कृष्ण प्रतिपदा को प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य समाज चौक, (प्रयाग) रूपबानी सिनेमा के सामने, इलाहाबाद में सम्पन्न होगी। एजेण्डा सभी को प्रथक डाक द्वारा भेजा जा रहा है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मन्त्री

नोट- कार्यालय त्रुटिवश आर्य मित्र साप्ताहिक दिनांक २४.२.२०१५ में अन्तरंग सभा की सूचना दिनांक २६ मार्च, २०१५ प्रकाशित किया गया था जिसे दि. ०५ अप्रैल, २०१५ पढ़ा जाये। -सभा मन्त्री

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।